✰ *हिन्दुत्वः एक सेक्युलर अवधारणा*

दया प्रकाश सिन्हा
आई. ए. एस. (सेवानिवृत्त)

''हिन्दुत्व'' (हिन्दूपन) को परिभाषित करना बहुत दुरूह कार्य है। **'हिन्दुत्व'** का अर्थ शब्दों में बांधना और भो कठिन है। **''हिन्दुत्त्व''** हिन्दूपथ (मजहब) नहीं है। हिन्दुओं को किसी भी पूजा–पद्धति या लोक–परलोक की आस्थाओं से यह निरपक्ष है। **''हिन्दुत्त्व''** राजनैतिक विचारधारा भी नहीं है।

'हिन्दुत्व' वह अमूर्त सांस्कृतिक मूल्य–समूह है, जो हिन्दुओं के व्यवहार, मान्यताओं और सांसारिक जीवन के सघषा की चुनैतियों की प्रतिक्रियाओं में अभिव्यक्त होता है। **'हिन्दुत्व'** हिन्दुआ की वह सामूहिक मनोवृत्ति और मानसिकता है, जो उन्होंने हजारों वषा के अनुभवों से जातीय स्मृति के रूप में विरासत में पाई है। यह उनके लिए एक जीवन–पद्धति है; जीने का एक आदर्श ढंग है, जो शब्दातीत है। जैसे फूल की सुगन्ध, फूल में रची बसी होती है, उसी तरह ''**हिंन्दुत्व**'', हिन्दू सामाजिक जीवन से विशेषकर, तथा भारतीय जीवन से 'सामान्यतः' अविभाज्य है। इस सुगन्ध को पहचानने की कोशिश निम्नलिखित उदाहरणों से की जा सकती हैः–

1. आज़ादी के बाद खतिहर भूमिहीनों को भूमि आवंटित करने को चुनौती सामने थी। आचार्य विनाबा भावे ने इसका हल अपने स्तर स खोजा। उन्होंने गाव–गाव जाकर भू–स्वामियों से अपील की कि वे भूमिहीनों को, स्वेच्छा से भूमिदान करें। आचार्य विनोबा भावे ने ऐसा करने के लिए किसी हिन्दू धर्मशास्त्र अथवा हिन्दू धर्म–शिक्षा का पालन नहीं किया था। राजनैतिक विचारधारा भी भूमिहीनों की इस समस्या का ऐसा हल नहीं इंगित करती। भूदान यज्ञ की प्रेरणा उन्होंने ''**हिन्दुत्त्व**'' से प्राप्त की थो जो अवचेतन के स्तर पर, जातीय स्मृति के रूप है उनकी मानसिकता में सजीव था।

2. जब जयप्रकाश नारायण ने चंबल के डाकुओं से स्वेच्छा से आत्म–समर्पण करवाया, तब वे न तो हिन्दू–पंथ से प्रेरित थे, और न माक्स या अन्य किसी राजनैतिक चिन्तन से। उनकी प्रेरणा थी ''**हिन्दुत्त्व**'', जो भारतीय संस्कृति के पंथ–निरपेक्ष, उदात्त मूल्यों का पर्याय है।

3. भारत का विभाजन 1947 में मजहब के आधार पर हुआ था। भारत में लगभग हजार वर्ष से रह रहे अधिकाश मुसलमानों ने, मोहम्मद अली जिन्ना की अध्यक्षता में घोषित किया कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग–अलग कौमें हैं, और दोना एक साथ नहीं रह सकते। भारतीय मुसलमाना का अपना अलग देश होना चाहिए। इसलिए उन्होंने भारत का विभाजन करके अपने लिए एक अलग देश पाकिस्तान की मांग की।

कांग्रेस के हिन्दू–नेताओं से अपनी मांग मनवाने के लिए उन्होंने हिन्दुओं की हत्या और लूटपाट का सहारा लिया। मोहम्मद अली जिन्ना ने 16 अगस्त 1946 को ***''सीधी कार्यवाही दिवस''*** के रूप में मनाया, जिसमें कुछ ही घंटा मे कलकत्ता में 5000 हिन्दुओं की हत्या कर दी गई। इस रक्तपात से घबराकर, महात्मा गांधी के नेतृत्व म कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की मांग के आगे घुटने टेक दिए। भारत को काट कर, पाकिस्तान बनाया गया। पाकिस्तान ने तुरन्त ही अपने को इस्लामो राज्य घोषित कर दिया। पथ (मजहब) के आधार पर देश विभाजित हुआ था। इस तर्क से भारत को भी अपने को हिन्दूराज्य घोषित कर देना चाहिए था किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। उसने एक पंथ–निरपेक्ष (सेक्युलर) राज्य होना स्वोकार किया। क्यों ? इसका उत्तर है ''**हिन्दुत्त्व**''।

4. देश के विभाजन के समय, पाकिस्तान में 24 प्रतिशत हिन्दू थे। आज वहा मुश्किल से एक प्रतिशत हिन्दू हैं। इसके विरुद्ध, विभाजन के समय हिन्दुस्तान में 8 प्रतिशत मुसलमान थे। आज उनकी आबादी लगभग 12 से 15 प्रतिशत ह। पाकिस्तान ने हिन्दू जनसंख्या से पीछा छुड़ाया–उनकी हत्या करके, उनको जबरन मुसलमान बनाकर या शरणार्थी बनाकर हिन्दुस्तान में ढकेल कर। पाकिस्तान में हिन्दुओ के प्रति किए गए अत्याचार की प्रतिक्रिया में कुछ छोटे–मोट दंगे मुसलमानों के विरुद्ध हिन्दुस्तान में भी हुए, किन्तु यहां के हिन्दू नेतृत्व ने उसे त्वरित कुचल दिया। पिछल सात दशकों में, हिन्दुस्तान में मुसलमान आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से फले–फूले है। मुसलमान भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायमूति, मुख्यमंत्री, आदि पदा पर रहे ह, और हैं! भारत के हिन्दू नेतृत्व ने पाकिस्तानी नेतृत्व के समान क्यो नहीं पाथिक (मज़हबो) अल्पसंख्यकों पर अत्याचार किए ? उत्तर है –''**हिन्दुत्व**''।

5. भारत का विभाजन 1947 मे हुआ और फिलिस्तीन का 1948 में। हिन्दुओं ने यह विभाजन स्वोकार कर लिया, किन्तु फिलिस्तीनी अरबों ने सात दशकों के बाद भी इसे स्वीकार नहीं किया और उनका इजराइल को उखाड़ फेंकने का युद्ध अभी भी जारी है। हिन्दुओं और फिलिस्तोनियों की असमान और भिन्न प्रतिक्रियाओं का क्या कारण है ? उत्तर है –''**हिन्दुत्त्व**''।

6. हिन्दू पथ (मजहब) के प्रमुख देवता हैं––राम, कृष्ण और शिव। अयोध्या में राम का मन्दिर, मथुरा में कृष्ण का मन्दिर तथा वाराणसो में विश्वनाथ (शिव) मन्दिर हिन्दुओं के सर्वाधिक महत्वपूण श्रद्धास्थल थे। इन तीनो ही मन्दिरों को तोड़ कर उनके स्थान पर मुगल शासन के दौरान मस्जिदें बना दी गईं। एक अनुमान है कि 700

वर्षो के मुस्लिम शासन के अन्तर्गत लगभग 30,000 हिन्दू, बौद्ध तथा जैन मन्दिर तोड़े गए। इसके बावजूद, मध्ययुग में भो किसी हिन्दू राजा ने एक भी मस्जिद नहीं तोडो। राना प्रताप, शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह, महाराजा छत्रसाल आदि जिन्होंने मुस्लिम आधिपत्य के विरुद्ध विद्रोह की पताका फहराई और मुस्लिम सत्ता के विरुद्ध युद्ध किया, उन्होनें कभी भी अपने राज्य में एक भी मस्जिद नहीं तोड़ी और न ही उन्होंने मुसलमानों को हिन्दु पंथ में परावर्तित करने का कोई प्रयत्न किया। उनकी धार्मिक सहिष्णुता उस मानसिकता से निर्मित थी जो '**हिन्दुत्व**' कहलाती है।

यहां पर उल्लेखनीय है अयोध्या का बाबरी ढ़ाँचा (रामजन्म भूमि), जो 6 दिसम्बर 1992 को हिन्दुओं द्वारा गिराया गया, पिछले हज़ार सालों के इतिहास में यह एक अनपेछित और असाधारण घटना है। पहली बार हिन्दुओं ने प्रतिक्रिया स्वरूप मुसलमानों जैसा व्यवहार किया। हिन्दुओं में जो विभाजन के द्वारा देश को तोड़े जाने का दमित क्रोध है, उसका विस्फोट बाबरी ढांचे को तोड़ कर प्रकट हुआ। यह एक निःसन्देह अपवाद है। अपवाद के आधार पर कोई भी निष्कर्ष निकालना ग़लत होगा।

7. मुग़ल सम्राट औरंगजेब की धर्मांधता सर्वविदित हैं। इसलिए अपेक्षित था कि औरंगजेब विरुद्ध संघर्ष करने वाले शिवाजी, औरंगजेब द्वारा हिन्दुओं के उत्पीड़न और अत्याचार की ईंट का जवाब पत्थर से देते। किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। जब सूरत पर शिवाजी ने आक्रमण करके उस पर मराठा झण्डा फहराया तो उनको पराजित मुगल सूबेदार की रूपवती पत्नी पेश की गई। कुछ देर शिवाजी उस अपूर्व सुन्दरी को देखते रह गये, फिर उन्होंने उससे कहा –***"काश! तुम मेरी माँ होती तो मैं भी तुम्हारी तरह सुन्दर होता।"*** और उन्होंने आदेश दिया कि उसे ससम्मान उसके परिवार में पहुंचा दिया जाये। शिवाजी ने ऐसा करने में किसी हिन्दुपंथ की किसी पुस्तक का अनुपालन नहीं किया। उन्होंने जो भी किया, वह '**हिन्दुत्व**' से प्रेरित था।

8. तुर्की वंश के गजनी (अफगानिस्तान) के सुल्तान मोहम्मद ग़ौरी ने सन् 1192 में हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान को पराजित करके, हिन्दुस्तान में मुस्लिम साम्राज्य की नींव रखी, जो लगभग सात–आठ सौ सालों तक चला। पृथ्वीराज पराजय के बाद बन्दी बनाया गया और अन्ततः उसको मृत्यु–दण्ड दिया गया। उसके केवल एक वर्ष पूर्व 1191 में हिन्दू राजा पृथ्वीराज ने मोहम्मद गौरी के आक्रमण को विफल करके, उसको बन्दी बना लिया था। किन्तु पृथ्वीराज ने पराजित और बन्दी शत्रु की हत्या नहीं की। उसने मोहम्मद गौरी को क्षमा करके, मुक्त कर दिया। पृथ्वीराज ने मोहम्मद गौरी को क्यों क्षमा कर दिया, जबकि समान परिस्थिति में मोहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज को क्षमा नहीं किया ? उत्तर है –**'हिन्दुत्व'**।

9. वर्तमान पश्चिमीकरण के पहले अधिकांश हिन्दु परिवारों में भोजन बनाते समय, पहली रोटी गाय को दी जाती थी और अन्तिम रोटी कौए, चिड़ियों या कुत्तों के लिए बनाई जाती थी। हिन्दुओं का कोई धर्मग्रंथ ऐसा करनें का निर्देश नहीं देता। फिर भी परंपरानुसार ऐसा सैकडों वर्षों से हो रहा है। क्यों ? इसका भी उत्तर '**हिन्दुत्व**' है।

10. वर्ष का एक दिन नागपंचमी के नाम से जाना जाता है। इस दिन परंपरानुसार सांप को दूध पिलाया जाता है। व्यवहार में दूध पिलाने के लिए सांप को घर पर लाना या बुलाना संभव नहीं है। इसीलिए घर के एक कोने में, एक कटोरी में दूध रख दिया जाता है। और दूसरे दिन यह मान लिया जाता है कि सांप ने आकर कभी दूध पी लिया होगा। सांप को दूध पिलाने का विधान न तो वेदों में है, न गीता में और न किसी अन्य ग्रंथ या स्मृति में है। फिर ऐसा क्यों किया जाता है। उत्तर है '**हिन्दुत्व**'।

11. यह जगतसत्य है कि यहूदी लोग जहा भी गए, या जहा भी उन्होंने शरण ली, वहां उन्हें प्रताडित किया गया। मुसलमानो और यहूदियों की शत्रुता तो सर्वज्ञात है। अतएव किसी भी मुसलमान देश में यहूदियों को शरण नहीं मिलो। ईसाई भी यहूदियों को प्रायः नापसन्द करत हैं, क्योंकि ईसा मसीह को यहूदियों ने सलीब पर चढाया था। इसलिए किसी भी ईसाई देश में यहूदियों का स्वागत नहीं हुआ। वे योरोप के जिस किसी भी देश में गए, वहां उनको सताया गया। हिटलर न तो साठ लाख यहूदियों को गैस–चैम्बर में मरवा दिया था। इस संदर्भ में, हिन्दुओं ने यहूदियों का जो स्वागत किया और उनको जो सम्मान दिया, वह अद्वितीय है। मुसलमाना और ईसाइयों के व्यवहार के विपरीत, हिन्दुओं का यहूदियों के प्रति व्यवहार क्यों सम्मानपूर्ण था ? उत्तर फिर वही है –'**हिन्दुत्व**'।

12. सातवीं शताब्दी में अरबी लोगों के ईरानी पर आक्रमण के पहले, ईरानवासी ''जोरस्ट्रियन'' धर्म का पालन करने थे, जिस ई.पू. पन्द्रहवीं शताब्दी में उनक मसीहा जरथूस्त्र ने स्थापित किया था, और जो अहुरमज़्दा की उपासना करत थे। ईरान की विजय के बाद अरब आक्रमणकारियों ने सब ईरानवासियों को जबर्दस्ती मुसलमान बनाया। जिन्होंने इस्लाम धर्म नहीं ग्रहण किया, वे या तो मार दिए गए या उन्होंने भागकर दूसरे देशा में शरण ली। ऐसे ही ईरानियों के एक दल ने अरबी अत्याचार से भागकर भारत में शरण ली। हिन्दुओं ने उनको शरण ही नहीं दी, अपितु उन्हें अपने धर्म के पालन की पूर्ण स्वतंत्रता भी दी और समाज में बराबरी और सम्मान का स्थान दिया। इन शरणार्थी ईरानियों को भारत में पारसी कहते ह, जिनकी वर्तमान भारत के आर्थिक उन्नयन में बहुत महत्वपूण भूमिका रही है। भारतीयों की इस

उदारता और धार्मिक सहिष्णुता का क्या कारण है ? उनक व्यक्तित्व और मानसिकता में व्याप्त ''**हिन्दुत्व**''।

13. हिन्दुओं के किसी महत्वपूण धर्मग्रंथ में मांसाहार निषिद्ध नहीं है। सच तो यह है कि प्राचीन काल में हिन्दुओं के अनेक मन्दिरों क परिसर में पशुओं की बलि दी जाती थी। देश के कुछ भागों में अभी भी यह प्रथा जीवित है। और सब हिन्दू शाकाहारी भी नहीं होते। फिर भी हिन्दू अवचेतन में मांसाहार की तुलना में शाकाहार के श्रेष्ठ होने का बोध रहता है। नियमित मांसाहारी भी न तो पशुओं को कटते देख सकते हैं, और न पशुआ के प्रति क्रूरता सहन कर सकते है। हिन्दू केबल ''झटका'' मांस खाते हैं। ''झटका'' का अर्थ है कि उस पशु का मास, जो तलवार के एक वार (झटक) स काटा गया हो। अर्थात् उस पशु का मास, जिसे अपनी हत्या में कम से कम कष्ट हुआ हो। मास खाने के लिए काट जा रहे पशु तक की पीड़ा के प्रति संवेदना–''**हिन्दुत्व**'' है।

14. जब मैं छोटा था, तो मेरी माँ मुझे रात को बाग में फूल या पत्ती तोड़ने नही जाने देती थी। उनका कहना था कि रात को पेड़ सोते है और किसी को नीद से उठाना अच्छी बात नहीं होती। रात को फूल नहीं तोडो–ऐसा आदेश किसो हिन्दू धमग्रंथ में नहीं है। पशुओं के साथ वृक्षों तक के प्रति क्रूरता को रोकना और उनके प्रति सहानुभूति और अपनत्व अनुभव करना ''**हिन्दुत्व''** है।

15. किसी हिन्दू धर्म–ग्रंथ का यह निर्दश नहीं है कि चीटियों को आटा या चीनी खिलायें। लेकिन आज भी उन इलाकों में, जो आधुनिक नहीं कहलाते, ऐसे तमाम आदमी मिल जाएंगे जो सुबह टहलने जाते समय एक पुडिया में थोडा आटा या चीनी ले जाते ह और चीटियों के बिल के पास आटा/चीनी बिखेर देते है। उन्हें ऐसा करने की प्रेरणां कौन देता है? '**हिन्दुत्व**'।

16. जब मुगलों के अन्त के बाद अंग्रेजों की हुकूमत स्थापित हुई तो उन्होंने अंग्रेजो को प्रशासन की भाषा बनाया। अंग्रेजी न तो हिन्दुस्तानी हिन्दू जानते थे, और न हिन्दुस्तानी मुसलमान। दोनों को ही नई भाषा सीखने की बराबर से चुनौती थी। अंग्रेजी और आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने की दौड़ मे हिन्दू मुसलमानों से बहुत आगे निकल गए। क्यो ? इसी संदर्भ में उल्लेखनीय है कि मुस्लिम आक्रमणकारियों ने अनेक पुस्तकालय जलाए। ईसाइयों ने भी एलेज़ड्रिया (मिश्र) का पुस्तकालय जलाया था। हिन्दुओं ने, मुसलमाना और ईसाइयों की तरह, अपने तीन हजार साल के इतिहास में कभी भी पुस्तकालय क्यों नहीं जलाए ? दोनों प्रश्नों के उत्तर है –''**हिन्दुत्व**''।

17. आजादी के पूर्व दलितों पर अत्याचार, उनके साथ छुआ–छ्त का व्यवहार, उनका मन्दिरों में प्रवेश–निषेध, उनका सामाजिक अपमान आदि आम बात थी। आजादी प्राप्त होते ही संसद ने दलित–उद्धार संबन्धी अधिनियम बनाकर दलित–विरोध को विधिक दण्डनीय अपराध किया। आज भी दूर–दराज के कोनों में कभी–कभी दलितों पर अत्याचार के मामले सुनाई पड़ते है, किंतु विधि, समाज और मीडिया द्वारा उनकी भत्सना की जाती है, और धीरे–धीरे ऐसी घटनाआ की संख्या घट रही है। दलित–उद्धार और पुनर्वास संबंधी अधिनियम जब संसद द्वारा पारित किए जा रहे थे, तब किसो सन्त, महन्त या हिन्दूधर्म के किसी ठेकेदार ने उनका विरोध नहीं किया। क्यों ? इसका उत्तर –''**हिन्दुत्व**'' है।

18. अभी हाल में ईसाई धर्म के सर्वोच्च धर्मगुरू पोप ने अधिकारिक व्यवस्था दी है कि औरतें रोमन कैथेलिक चर्च में पादरी नहीं बनाई जा सकतीं, क्योंकि स्वय ईसा मसीह ने किसी स्त्री को अपना शिष्य (apostle) नहीं बनाया था। इसी तरह से स्त्रियों के गर्भपात (abortion) संबधी नियमों का भी चर्च द्वारा घोर विरोध हो रहा है। किंतु भारत में स्त्री–सशक्तिकरण के लिए बनाए गए विधवा–विवाह, स्त्री–शिक्षा, बाल–बिवाह, सती–प्रथा, स्त्री–पुरुष समानता, संपत्ति–उत्तराधिकार संबंधी अधिनियमों का विरोध नहीं हुआ। क्यों ? यही तो ''**हिन्दुत्व**'' है।

व्यवहार में अभिव्यक्त हिन्दुत्व (''हिन्दुत्व'' इन एक्शन) के कुछ उपरोक्त उदाहरण हैं। भारतीय संदर्भ में 'हिंदुत्व' धार्मिक सहिष्णुता, सर्वधर्म समभाव, क्षमाशीलता, विविधता में एकता को स्वीकारना, शान्ति–कामना, एकान्तिकवाद (एक्सक्लूसिविज़्म) को अस्वीकार करते हुए, समावेशिक (इनक्लूसिविज्म) आचरण, प्राणिमात्र के लिए करूणा, प्रकृति के साथ समन्वय और सामन्जस्य, अनाक्रमाकता, पंथ–निरपेक्ष नैतिकता, ज्ञान–अर्जन की पिपासा आदि कुछ ''हिन्दुत्व'' के लक्षण हैं।

<u>''हिन्दुत्व'' और हिन्दूपंथ (मजहब अथवा रिलिजन)</u>

'**हिन्दू**', ''**हिन्दूपंथ**'' और ''**हिन्दुत्व**'' एक–दूसरे के पर्यायवाची शब्द नहीं हैं। इन तीनों के अर्थ अलग–अलग ह। हिन्दूपंथ के अनुयाइयों के लिए पहचान–सूचक शब्द हिन्दू, स्वय हिन्दुओं का दिया हुआ नहीं है। ईरानी और तुर्की आक्रमणकारी भारत के लिए हिन्द शब्द का प्रयोग करते थे। इसी संदर्भ में भारत मे रहने वाले लोगों के लिए उन्होंने ''हिन्दू'' शब्द प्रचलित किया। इस तरह से ''हिन्दू'' एक भौगोलिक शब्द है। साथ ही उन्होंने हिन्द में रहने वाले हिन्दू के मजहब के लिए भी हिन्दू शब्द का प्रयोग किया और उन्होंने हिन्दू पंथ के मानने वालों के लिए भी हिन्दू शब्द का उपयोग किया। इस तरह से हिन्दू शब्द के दो अर्थ हैं–एक भौगोलिक (हिंद में रहने वाला)। तथा दूसरा पंथसूचक (हिन्दूपंथ माननेवाला)।

''**हिन्दुत्व**'' का आशय न तो हिन्द में रहने वालों से है और न हिन्दपंथ के मानन वालों से। ''**हिन्दुत्व**'' और ''हिन्दूपंथ'' पर्यायवाची नहीं है। हिन्दूपंथ का आशय है एक विशिष्ट पूजा–पद्धति, लोक–परलोक में विश्वास, विभिन्न देवी–देवताओं एवं अलौकिक शक्तियों की उपासना आदि से। ''हिन्दूपंथ'' की आस्थाओं से भिन्न, जो हिन्दुओ ने पिछले हजारों सालों में पंथ–निरपेक्ष, नैतिक मूल्य विकसित किए ह, और जो हिन्दुओं के पंथ–निरपेक्ष व्यवहार में प्रकट होते है, उसे ''**हिन्दुत्व**'' कहते ह। इस तरह से ''**हिन्दुत्व**'' ''हिन्दूपन'' का द्योतक है, ''हिन्दूपंथ'' का नहीं।

हिन्दुत्व और भारतीयपन

पिछले एक हजार सालों स हिन्दुओं के साथ रहत हुए, अल्पसंख्यक, गैर–हिन्दुओं में भी ''हिंन्दूपन'' आ गया है। इसलिए ''हिन्दूपन'' को ''भारतीयपन'' भी कहा जा सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में **हिन्दुत्व** और ''भारतीयपन'' (Indianness) समानार्थी है। मुसलमानो में शिया–सुन्नी विभेद प्रायः उतना ही पुराना है जितना स्वयं इस्लाम। शिया–सुन्नी संघर्ष इतिहास का एक तथ्य है। इराक में सद्दाम के पतन के पश्चात, शिया–सुन्नी के बीच चल रहे खूनी संग्राम से समाचार–पत्र रंगे रहे हैं। पडोसी पाकिस्तान मं शिया और सुन्नी एक मस्जिद में नमाज नहीं पढ़ते। एक दूसरे की मस्जिद में बम विस्फोट करते ह। एक दूसरे के नेताओं को गोली स उडा देते है। कितु हिन्दुस्तान में ऐसा नहीं है। यहां शिया–सुन्नी के बीच की विभाजक रेखा काफी धुंधली है। दोनो प्रायः एक साथ एक मस्जिद में नमाज पढ़ते हैं, और उनके बीच दंगे प्रायः नही के बराबर होते हैं। भारतीय मुसलमाना में एकान्तिक मानसिकता तथा आक्रमकता का पाकिस्तानी मुसलमानो की तुलना मे कम होना हिन्दुत्व की ही देन है।

पाकिस्तान में सुन्नी मुसलमाना ने अहमदिया मुसलमानो को गैर–मुस्लिम (काफिर) घोषित बना दिया है। किन्तु हिन्दुस्तान में उन्होंने ऐसा नहीं किया है। क्यों ? क्योंकि हिन्दुस्तान के मुसलमान ''**हिन्दुत्व**'' से प्रभावित ह।

संक्षेप में 'हिन्दुत्व', कम या ज़्यादा, सभी भारतीयों की मानसिकता/मनोवृत्ति का परिचायक हैं। भारतीय संस्कृति से अभिप्रेरित, हिन्दुत्व वह नैतिक मूल्य है, जो सब भारतीयों (हिन्दुओं और ग़ैर–हिन्दुओं) की मानसिकता को, कम या ज़्यादा प्रभावित करते हैं। इस प्रकार 'हिन्दुत्व' एक पंथ–निरपेक्ष (सेक्युलर) अवधारणा है।

बी–255, सेक्टर–26,
नोएडा–201301
दूरभाष : 9891510230
dpsinha50@hotmail.com